पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी (पीएलजीए)

THE NARRATIVE

क्या है पीएलजीए संगठन (भाग 1)

- पीपुल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी (पीएलजीए) माओवादियों (नक्सलियों) की सैन्य इकाई है जिसका अंतिम लक्ष्य भारतीय सेना को हराकर भारतीय गणराज्य की लोकतांत्रिक व्यव्यस्था खत्म कर अधिनायकवादी कम्युनिस्ट तानाशाही स्थापित करने का है

- पीएलजीए की स्थापना वर्ष 2000 हुई थी जिसके उपरांत से देश भर में माओवादियों से संबंधित सभी हमलों के लिए पीएलजीए सीधे तौर पर उत्तरदायी है

- अपने 22 वर्षों के अस्तित्व के काल मे पीएलजीए संबंधित हिंसा में 20000 से भी अधिक लोग मारे गए हैं जिनमें सबसे बड़ी संख्या जनजातीय/वनवासी समुदाय की है

THE NARRATIVE

कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (माओइस्ट) और पीएलजीए (भाग 2)

- कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (माओइस्ट) की संरचना में पोलित ब्यूरो सबसे सर्वोच्च इकाई है जिसमे 13 से 14 सदस्य नामित हैं, वर्तमान में नम्बला केशव राव इसके जनरल सेक्रेटरी हैं
- पोलित ब्यूरो के उपरांत सेंट्रल कमिटी आती है जिसमें 32 सदस्य नामित हैं
- सेंट्रल कमिटी के समकक्ष ही सेंट्रल मिलिट्री कमीशन है जो PLGA को संचालित करता है
- पार्टी द्वारा उत्तरी, दक्षिण पश्चिमी, ओडिसा-छत्तीसगढ़, पूर्वी एवं केंद्रीय कुल पांच रीजनल बयूरो गठित किए गए हैं
- इनके नीचे जोनल मिलिट्री कमीशन, राज्य एवं विशेष जोनल कमेटियां गठित की गई हैं जो राज्यों में पीएलजीए का संचालन करती हैं
- इसके नीचे एरिया कमेटियों का गठन किया गया है जिसकी निगरानी में सुरक्षाबलों एवं नागरिकों पर हमला किया जाता है

THE NARRATIVE

बुनियादी रणनीति
(भाग 3)

- पश्चिम में शोर मचा कर पूर्व में हमला करना
- जब शत्रु आगे बढ़े तो पीछे हटना
- जब शत्रु क्षेत्र में जमने का प्रयास करे तो छोटे हमलों से तंग करना
- जब शत्रु थक जाए तो पूरी शक्ति से हमला करना
- जब वह पीछे हटे तो आगे बढ़ना
- टैक्टिकल काउंटर ऑफेंसिव कैंपेन जैसे अभियान
- बीच-बीच मे हिंसा से स्थानीय लोगों में भय बनाए रखना
- वर्चस्व वाले क्षेत्रों में शिक्षा एवं विकास से लोगों को दूर रखना
- अतिवादी कम्युनिस्ट साहित्य का कैडरों एवं बच्चों में व्यापक प्रसार करना

संरचना एवं संख्या
(भाग 4)

- पीएलजीए लड़ाकों की वर्तमान संख्या लगभग 8000 आंकी जाती है, सभी योग्यता अनुसार हथियारों से लैस हैं
- मिलिशिया सदस्यों की संख्या 35-40 हज़ार के बीच
- देशभर में कुल 55 या इससे अधिक पलाटून्स के सक्रिय होने का अनुमान
- तीन प्लाटून को मिलाकर एक कंपनी
- प्रत्येक प्लाटून में दो LOS एवं एक LSG
- इनके ऊपर बटालियन जिनकी आवश्यकता अनुसार तैनाती
- इसके अतिरिक्त विशेष मारक दस्ते एवं खुफिया इकाई

प्रारूप एवं संयोजन (भाग 5)

- ज्यादातर कैडर जनजातीय बाहुल्य क्षेत्रों से होते हैं जिन्हें दिग्भ्रमित कर कम आयु में संगठन में शामिल कर लिया जाता है
- संगठन की कुल संख्या में महिला कैडरों का अनुपात लगभग 60% है जिनका साथी पुरुष कैडरों द्वारा शारीरिक एवं मानसिक शोषण बेहद सामान्य
- सामान्यतः शिर्ष स्तर के नेता आंध्रप्रदेश/तेलंगाना के क्षेत्र से होते हैं जो अन्य राज्यों के स्थानीय जनजातीय कैडरों के साथ अमूमन दुर्व्यवहार भी करते हैं

रक्तपात के आंकड़े (2000–22)
(भाग 6)

- केवल पिछले दो दशकों में माओवादी हिंसा ने आधिकारिक तौर पर कुल 11008 लोगों की जान ली है (अनौपचारिक रूप से इसके 20 हजार तक होने का अनुमान)
- हत्या से संबंधित कुल 5182 घटनाएं , जिनमें कुल 3910 निर्दोष नागरिक मारे गए हैं।
- कुल 2630 जवान बलिदान हुए हैं जबकि कुल 4216 माओवादी मारे गए हैं।
- अकेले छत्तीसगढ़ राज्य बनने के उपरांत आधिकारिक रूप से 1700 निर्दोष नागरिकों के मारे जाने की पुष्टि
- वर्ष 2022 में हत्या से संबंधित कुल 251 घटनाएं जिसमें 90 से अधिक नागरिकों की हत्या

भारत में पीएलजीए द्वारा किए गए कुछ प्रमुख हमले (भाग 7)

- रानी बोदली नरसंहार (2007)- छत्तीसगढ़ के बीजापुर में जवानों के कैंप पर हमला कर 500 माओवादियों ने 55 जवानों की नृशंस हत्या कर दी, जवानों को कुल्हाड़ियों से काटा गया
- बालीमेला जलाशय हमला (2008) - हमले में जवानों की नाव डूब गई, 38 जवान बलिदान हुए
- राजनांदगांव हमला (2009)- हमलें में पुलिस अधीक्षक समेत 29 जवान बलिदान हुए
- सिलदा कैम्प हमला (2010)- 24 जवानों की नृशंस हत्या
- जननेश्वरी एक्सप्रेस दुर्घटना (2010)- कुल 148 यात्रियों की मृत्यु, जबकि 200 से अधिक यात्री गंभीर रूप से घायल

THE NARRATIVE

कुछ अन्य प्रमुख हमले
(भाग 8)

- ताड़मेटला नरसंहार (2010)- अब तक का सबसे बड़ा हमला कुल 76 जवानों की नृशंस हत्या , शवों को क्षत विक्षत हालात में छोड़ा गया
- दंतेवाड़ा विस्फोट (2010)- सैन्य बस को लैंडमाइन विस्फोट से उड़ाया, 40 से अधिक जवान एवं नागरिक मारे गए
- झीरम घाटी हमला (2013) कांग्रेस नेतृत्व पर घात लगाकर 200 माओवादियों ने ताबड़तोड़ गोलियां बरसाई, महेंद्र कर्मा को 100 से अधिक गोलियां मारी गई उनके शव पे 50 से अधिक स्थानों पर चाकुओं से गोदे जाने के निशान
- सुकमा चिंतागुफा हमला (2017)- कुल 26 जवान बलिदान हुए
- बीजापुर हमला (2021)- घात लगाकर बैठे माओवादियों ने हमला किया, कुल 22 जवान बलिदान हुए